International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 1; Issue 9; September 2016; Page No. 77-78

चन्द्रकान्ता के कथा साहित्य में नारी अन्तर्द्वन्द

रेनुका कुमारी

पी-एच0डी0, हिन्दी विभाग, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

चन्द्रकान्ता विशिन का जन्म 1 सितम्बर 1938 ई0 में कश्मीर के श्री नगर में एक सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ। स्वर्ग कश्मीर में जन्म होने के कारण व स्वयं को सौभाग्य शाली मानती हैं। उन्होंने स्वयं कहा है– ''कश्मीर जैसी सुन्दर प्रकृति प्रिय वादी में जन्म लेना हर किसी के भाग्य में नहीं होता। मैं उन भाग्यशालियों में हूँ जिन्होंने वहाँ जन्म ही नही लिया, वहाँ के पर्वत में पहाड़ियों, चीड़ देवहारू और झीलों पर झुके वेद वृक्षों की कतारों को अपनी रंगों में उतरते महसूस किया।

चन्द्रकान्ता जी का बाल्यकाल सुन्दर झील, पहाड़ लहलाते पेड़ आदि के बीच व्यतीत हुआ। उन्हें काश्मीर की खुली वादियों में भ्रमण करना अधिक भाता था। जब उनके सभी भाई–बहन घर में बैठे खिलौनों से खेलते थे वे बादाम, नाशपाती, अखरोट इकट्ठा करते हुए घूमती थीं, परन्तु बचपन के उत्तरार्द्ध में ही चन्द्रकान्ता को कश्मीर से बिछड़ना पड़ा, जो उन्हें बहुत तकलीफ देह लगा। आज भी उनके दिलों –दिमाग में कश्मीर की स्मृतियाँ पल्लवित हुई।

महिला कथाकारों ने संघर्षशील नारी के अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण किया हैं। आज की नारी अस्तित्व को पाने और अस्मिता को बनाये रखने के लिए निरन्तर संघर्ष करती हैं, परंतु उसके समक्ष परम्परा और आधुनिकता के बीच जो अड़चन आती है। उसका सामना करती है। वह अपने आत्मसम्मान और स्वतंत्रतता के लिए संघर्ष प्रारंभिक दौर की स्त्री बेचारगी, लाचारी, दुःख को चुपचाप सहने वाली तथा घुट–घुअकर जीवन जीने वाली थी, उसने आज दीनता का रोना बन्द कर दिया है। उसका स्थान जीवन संघर्षों ने ले लिया है और स्त्री नई संघर्षभूमि को तलाशते हुए अपनी अस्मिता की पहचान बना रही है। 'बेचारगी' 'लाचारी' प्रति शोध और विद्रोह में बदल गई हैं। समस्याओं को सुलझाने की अपेक्षा वह अपने लिए नये रास्ते के चुनाव को बेहतर समझती है। बदला लेने और प्रेम करने के मामले में वह पुरूषों से काफी आगे निकल गई है।

नारी सदा द्वन्द्वात्मक स्थिति से गुजरती है। नारी को प्राप्त परिवेश, व्यक्तित्व और अस्तित्व खोज की भावन से उसमें विचार और भावन के स्तर पर द्वन्द्व अधिक प्राया जाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नारी की विचार प्रक्रिया में विविध बदलाव आने से प्राचीन परंपराओं और आधुनिक परिवर्तित मूल्यों से टकराती रही है। इस द्वन्द्वात्मक स्थिति के बारे में डॉ0 जौहरा अफइनल का मत है – वह परम्परा और आधुनिकता के बीच फँसकर रह गई है न तो वह उन संस्कारों को पूर्ण रूप से त्याग पाई है न ही आधुनिकता को सम्पूर्ण रूप से अपना सकी है उसका यह द्वन्द्व बदलते परिवेश के कारण बन चुका है उतना ही भावुक स्वभाव और पुरूषों के समान जीने की लालसा के कारण भी है। उसके व्यक्तित्व के साथ नैतिक मर्यादा, मूल्य के प्रश्न इतने गहरे स्तर तक जुड़े हुए है कि वह उनसे आज तक छुटकारा नहीं पर सकी है। नारी के द्वन्द्व की ''यह स्थिति उभरी है। जहाँ उसने अपने व्यक्तित्व के निर्माण के निमित्त विचार और भावना को संतुलित ढंग से उपयोग किया है। और जीवन को अपनी इच्छानुरूप जीना चाहा है विचार और भावना के द्वन्द्व में कभी विचार प्रमुख हो उठे है और कभी भावना।

आज नारी वह सब करना चाहती है जो युग में पुरूष ही केवल करता था। पढ़ाई, ललित कलायें, खेलकूद विज्ञान, तकनीकी क्षेत्र, शासन आदि हर क्षेत्र में वह पुरूषों के समान यश पाना चाहती है उसके प्रेम के संदर्भ भी बदल चुके हैं। लज्जा के स्थान पर कर्मठता आने लगी है यौवन, जीवन, विवाह आदि अनेक प्रश्न नए ढंग से सुलझाने का प्रयास करती है। अतः वह इस द्वन्द्व में अधिक उलझी दिखाई दे रही है। चन्द्रकान्ता की कहानियों में भी यह नारी संघर्ष अन्तर्द्वन्द्व के भाव दृष्टि गोचर होते है।

उपसंहार

नदी का काम बहना है' कहानी इला सत्येन से प्रेम करती थी, परंतु उससे विवाह करने में असफल रहती है तो सत्यने के भाई बुद्धुराम लोकसे विवाह करती है। विवाह और संतान प्राप्ति के पश्चात् भी सत्येन जो साधु बन जाता है, उससे मिलने जाती है। सत्येन की चाहत मन में विद्यमान होने से उसमें अन्त र्द्वन्द्व दृष्टिगत होता है – ''देह का दाय भी पूरा करना पड़ेगा तो करूँगी निशा। पर वह मेरा आखिरी सच नही होग, कपड़े फींचते, रसोई बनाते, बच्चे खिलाते, सभी सामाजिक शर्तो के साथ जीते हुए भी मेरे भीतर एक खाली कोना बचा रहेगा। वह मेरा अपना खोजा हुआ कोना है। मेरी चेतना से जुड़ा। देह से अलग, पर उतना ही सच, उसे तो मुझे ही भरना होगा।''

'शेष दिन' कहानी की रत्ना दाम्पत्य विघटन के कारण दुःखी है। वह अपनी तरफ से निभाने का पूर्ण प्रयास करती है, परंतु कामकाजी होने के कारण संदेह करता है। पतिदेन किसी न किसी कारण झगड़ता है जिससे बेटे चिंटू पर मानसिक प्रभाव पड़ता है। वह स्वयं सोचती है – ''वह दिन व दिन सिकुडने लगी है। उसका आकार के चुली सा होता जा रहा है गुबरैला– केंचुला जिसे किसी भी घड़ी पैंरों के नीचे मसलकर खत्म किया जा सकता है कौन करेगा शनाख्त? किसकी शनाख्त, एक पिसी हुई मलवे की मिट्टी की? वह तो फैलकर आकाश को माप लेना चाहती थी। सब कुछ गलत कैसे हो गया?''

'गलत गठित' कहानी की विभा एक शिक्षित नारी है। जो विवाह की चिन्ता और माता–पिता के प्राचीन परम्परावादी विचारों के कारण मन में केई प्रकार के भाव उमड़ने लगते है ''मम्मी जी यह दूर रिश्ता आज ही याद आया या पहले भी? यों वे कई सालों'' से आन्ध्र में रहती है। इस तरह तो

रिश्तेदारों में शादी होना दाम्पत्य सुख की एक शर्त भी मानी जाती है। या शायद तुम्हारे लिए उन्होंने बहुत ऊँचे सपने चुनें हो... क्या मालूम''

'लगातार युद्ध' कहानी में पारिवारिक एवं दाम्पत्य जीवन के कारण उत्पन्न गुरप्रीत के मन में अन्तर्द्वन्द्व व्यक्त हुआ है। वह एक कामकाजी महिला है जो घर और बाहर दोनों जगह काम करती है। जब उसका बच्चा छोटा होता है तो उसका पति उसे कुछ महीने की छुट्टी लेने की कहता है। बाद में उसे छोटी–छोटी बातों पर डाँटता फटकारता है। ''क्या वह कठफोड़ा था? गुरप्रीत के सीने में कोंचा–सा लगा, असीब सी पीर उठी। यह कठफोड़ा क्या उसके भीतर से, उसे ही टुक–टुक टोंच रहा है? उसे लगा वह यह आवाजें सुनेगी तो कमजोर हो जाएगी, शायद डर भी जाए। नहीं, गुरप्रीत जट्टनी कमजोर नहीं होना चाहती।'' वह अपने पति का विरोध करती है कि मैं भी तुमसे अधिक रूपये कमाती हूँ।

निष्कर्ष

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कह सकते हैं कि चन्द्रकन्ता की कहानियों में संघर्षरत नारी क अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण व्यापक फलक पर हुआ है।

सन्दर्भ

1. नदी का काम बहना' ('कालीबर्फ' कहानी संग्रह), चन्द्रकान्ता पृ0 54।
2. शेष दिन' ('काली बर्फ' कहानी संग्रह), चन्द्रकान्ता, पृ0 78।
3. गलत गठित' ('काली बर्फ') कहानी संग्रह, चन्द्रकान्ता पृ0 85।
4. गलत लोगों के बीच' (तैंतीबाई कहानी संग्रह) चन्द्रकान्ता पृ0 184।
5. सलाखों के पीछे, चन्द्रकान्ता, स्वाति प्रकाशन हैदराबाद प्रथम संस्करण 1975।
6. गलत लोगों के बीच चन्द्रकान्ता, राजधानी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1984।
7. पोशनूल की वापसी, चन्द्रकान्ता, पराग प्रकाशन, दिल्लीं प्रथम संस्करण – 1988।
8. दहलीज पर न्याय, चन्द्रकान्ता, ज्ञान भारती प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1991।
9. मेरी प्रिय संभाषण, महादेवी वर्मा।
10. स्त्री मुक्ति –स्त्री का वर्तमान परिदृश्य नीलम शंकर, अप्रैल 2006।
11. स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति, मृणाल पाण्डे।
12. डा0 अहिल्या मिश्र, नारीः दंश दलन और दायित्व पृ0।
13. सुमन कृष्णाकांत, इक्कीसवी सदीं की ओर, पृ0 28।
14. हिन्दी कहानी और स्त्री विमर्श, उषा झा साक्षी प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण 1998।
15. हिन्दी उपन्यासों में नारी जागरण, डा0 सुनीता सारवरे नमन प्रकाशन मुम्बई, संस्करण 1998।